

न्यायालय:- आसिफ अहमद अब्बासी, न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी, तहसील चंदेरी  
चंदेरी जिला-अशोकनगर म0प्र0

दांडिक प्रकरण क-204 / 2015  
संस्थित दिनांक-19.08.2015

मध्यप्रदेश राज्य द्वारा  
आरक्षी केन्द्र चंदेरी  
जिला अशोकनगर।

.....अभियोजन

**विरुद्ध**

1. अब्दुल रहीस पुत्र अब्दुल हमीद उम्र 30 साल
  2. अब्दुल हमीद पुत्र अब्दुल गनी उम्र 64 साल
  3. अब्दुल जलील पुत्र अब्दुल हमीद उम्र 35 साल
  4. अब्दुल रसीद पुत्र अब्दुल हमीद उम्र 33 साल
  5. अब्दुल अलील पुत्र अब्दुल हमीद उम्र 22 साल
  6. सिताराबी पुत्री अब्दुल हमीद उम्र 20 साल
  7. गुलचमन पत्नी अब्दुल हमीद उम्र 62 साल
  8. इरफानाबी पत्नी अब्दुल जलील उम्र 32 साल
  9. नाजमीन पत्नी अब्दुल रसीद उम्र 28 साल
- निवासीगण बाहर शहर कलारी मोहल्ला चंदेरी  
जिला अशोकनगर म0प्र0

..... अभियुक्तगण

—: निर्णय :-

(आज दिनांक 23.02.2018 को घोषित)

- 01- अभियुक्तगण के विरुद्ध भा0द0वि0 की धारा 498(ए), 294, 323/34 तीन शीर्ष दण्डनीय अपराध के आरोप है कि उन्होंने फरियादी समरजहां को दिनांक 30.04.2013 को उसकी शादी के पश्चात् बाहर शहर गरमाई बावडी के पास चंदेरी में उसके पति या पति के नातेदार होते हुये फरियादी समरजहां से एक मोटरसाईकिल तथा एलसीडी व जायदाद में हिस्से की मांग पूरी करने के लिये उसे शारीरिक एवं मानसिक रूप से प्रताड़ित कर क्रूरता कारित की एवं दिनांक 05.08.2015 को फरियादी समरजहां को लोक स्थान पर अश्लील गालिया देकर उसे व सुनने वालों को क्षोभ कारित किया एवं फरियादी समरजहां को उपहति कारित करने का सामान्य आशय निर्मित कर उक्त सामान्य आशय के अग्रसरण में तुम अभियुक्तगण ने फरियादिया समरजहां, अब्दुल वहीद एवं हक्कुल यकीन की लातघूसों से मारपीट कर उन्हें स्वेच्छया उपहति कारित की।
- 02- अभियोजन कहानी संक्षेप में इस प्रकार है कि 30.04.2013 को हुआ था, फरियादिया के पिता ने अपनी हैसियत से लगभग 6 लाख रुपये का दहेज शादी में दिया था, शादी के तीन दिन बाद से ही सास गुलचमन ससुर हमीद पित अब्दुल रहीस जेठ अब्दुल जलील दूसरा जेठ अब्दुल रसीद जेठानी इरफाना बी दूसरी जेठानी नाजमीन बी देवर अब्दुल अलीम व नंद सितारा बी फरियादिया को तरह-तरह से प्रताड़ित करने लगे व ससुराल के सभी लोग पति रहीस से फरियादिया की पिटाई करवाते थे, और कहते थे कि तू पिता की अकेली औलाद है अपने पिता से मोटर साइकिल व एल. सी. डी. टीवी लाकर दो व अपने पिता की

जायदाद अपने दामाद के नाम करवाले नहीं, तो हम तुझे ऐसे ही परेशान करते रहेंगे। फरियादिया समरजहां के साथ अब्दुल रहीस ने कई बार मारपीट की, समरजहां को परेशान करने लगे और मारपीट करने से बंद नहीं की तो फरियादियां ने उक्त बात अपने परिवार वालों को बताई।

- 03- फरियादिया के परिवार वालों ने दिनांक 05.08.2015 को सभी ससुराल के लोगों को गरमाई बाबडी पर बुलाया और कहा कि समरजहां को परेशान क्यों करते हैं, तो रहीस, हमीद, जलील, रसीद, अलीम ने यकीन, बहीद लातघूंसो से मारपीट की तथा गंदी-गंदी गालिया देने लगे तथा गुलचमन, इरफाना बी, सितारा बी एवं नाजमीन ने समरजहां की मारपीट की, जिससे सभी को चोटें आई। मौके पर मुसब्बर, सफात हुसैन आदि थे जिन्होंने घटना देखी। फरियादी समरजहां द्वारा पुलिस थाना चंदेरी में अभियुक्तगण के विरुद्ध प्रथम सूचना लेखबद्ध करने के लिये आवेदन प्र.पी.-01 प्रस्तुत किया था। फरियादिया के आवेदन पर से अभियुक्तगण के विरुद्ध पुलिस थाना चंदेरी के अपराध क्रमांक 277/2015 अंतर्गत धारा-498ए, 294, 323, 34 भा0द0वि0 के तहत प्रकरण पंजीबद्ध कर प्र.पी.-02 की प्रथम सूचना रिपोर्ट लेखबद्ध की गई। प्रकरण में विवेचना की गई बाद आवश्यक विवेचना उपरांत अभियोग पत्र विचारण हेतु न्यायालय में प्रस्तुत किया गया।
- 04- प्रकरण में उल्लेखनीय है कि दिनांक 22.02.2018 को फरियादी समरजहां व आहत अब्दुल वहीद एवं हक्कुल यकीन द्वारा अभियुक्तगण से राजीनामा करने बाबत आवेदन अंतर्गत धारा 320 (1) व 320 (2) द.प्र.स. के प्रस्तुत किये गये जिन्हें स्वीकार करते हुये अभियुक्तगण को भा.द.वि. की धारा 294, 323/34 तीन शीर्ष के तहत दण्डनीय अपराध के आरोप से दोषमुक्त घोषित किया गया। अभियुक्तगण पर आरोपित भा0द0वि0 की धारा 498 (ए) शमनीय प्रकृति की न होने से उक्त धारा के तहत अभियुक्तगण पर विचारण किया गया।
- 05- अभियुक्तगण को उनके विरुद्ध लगाये गये दण्डनीय अपराध को आरोप पढ कर सुनाये गये उसने अपराध करना अस्वीकार किया। अभियुक्तगण का परीक्षण अंतर्गत धारा-313 द0प्र0सं0 में कहना है कि वह निर्दोष है उन्हें झूठा फंसाया गया है।
- 06- प्रकरण के निराकरण में निम्न विचारणीय प्रश्न हैं :-

1.	क्या अभियुक्तगण ने फरियादी समरजहां को दिनांक 30.04.2013 को उसकी शादी के पश्चात् बाहर शहर गरमाई बावडी के पास चंदेरी में उसके पति या पति के नातेदार होते हुये फरियादी समरजहां से एक मोटरसाईकिल तथा एल.सी.डी. एवं जायदाद में हिस्से की मांग पूरी करने के लिये उसे शारीरिक एवं मानसिक रूप से प्रताडित कर कूरता कारित की ?
----	---

2.	दोष सिद्धि अथवा दोष मुक्ति ?
----	------------------------------

—:: सकारण निष्कर्ष ::—

विचारणीय प्रश्न क्रमांक 01 व 02 का विवेचन एवं निष्कर्ष:—

- 07— प्रकरण में हुये राजीनामे एवं अभिलेख पर आई साक्ष्य को देखते हुये प्रकरण फरियादी समरजहां (अ0सा0-1) सहित उसके पिता हक्कुन यकीन (अ0सा0-2), अब्दुल वहीद (अ0सा0-03) व शफात हुसैन (अ0सा0-04) के कथन न्यायालय में कराये गये। समरजहां (अ0सा0-1) का अपने न्यायालीन कथनों में कहना है कि दिनांक 30.04.2013 को उसका विवाह अब्दुल रहीस से हुआ था। शादी के बाद एक साल तक वह ससुराल में अच्छे से रही थी तथा एक साल के बाद मामूली बातों पर उसका पति से झगडा होने लगा था जिस पर पति अब्दुल रहीस उसके साथ गाली-गलौच करता था और जब तीन वर्ष अब्दुल रहीस ने उसके साथ मारपीट कर दी तो उसके पिता हक्कुल यकीन (अ0सा0-02) ने उसे अपने पास बुला लिया था और तब से मायके में रह रही है तथा उसका पति उसे लेने नहीं आया।
- 08— समरजहां (अ0सा0-1) का कहना है कि उसके परिवार के लोगों ने इस संबंध में समाज के लोगों को जोडा था और जब कोई हल निकला तो उसके चाचा, फूफा व परिवार के अन्य लोगों ने थाने पर शिकायत करवा दी थी तथा उसके परिवार के लोगों ने ही थाने पर आवेदन प्र.पी.-01 बनाकर दिया था। जिस पर इस साक्षी ने अपने हस्ताक्षर होना स्वीकार तो किये है, परन्तु उसका कहना है कि आवेदन न तो उसने लिखा था, उसके तो थाने पर हस्ताक्षर कराये गये थे।
- 09— समरजहां (अ0सा0-1) ने अपने उपरोक्त न्यायालीन कथनों में अभियुक्त अब्दुल रहीस को छोडकर शेष किसी भी अभियुक्त के संबंध में कोई कथन न्यायालय में नहीं दिये है, वही अब्दुल रहीस के संबंध में भी इस साक्षी का मात्र इतना कहना है कि शादी के एक साल बाद छोटी-छोटी बातों पर उसका पति से झगडा होता है, जिसको लेकर पति उसके साथ गाली-गलौच करता था तथा उसके साथ मारपीट भी की थी। फरियादिया समरजहां (अ0सा0-1) का अपने उपरोक्त न्यायालीन कथनों में कहीं भी यह कहना नहीं है कि उसका पति सहित अन्य अभियुक्तगण उसे दहेज की मांग के लिये प्रताडित करते थे या उक्त मांग को लेकर उसके साथ मारपीट करते थे, बल्कि इसके विपरीत समरजहां (अ0सा0-1) का यह कहना है कि वह एक साल ससुराल में अच्छी तरह से रही थी, उसे कोई परेशानी ससुराल में नहीं हुई।
- 10— समरजहां (अ0सा0-1) के द्वारा दिये गये उपरोक्त न्यायालीन कथन पूरी तरह से अभियोजन घटना के विपरीत है तथा इस साक्षी के न्यायालीन कथन एवं पुलिस को दिये गये कथन व प्र.पी.-01 के आवेदन में वर्णित घटना में गम्भीर तात्विक विरोधाभास देखा जा सकता है। अभियोजन का समर्थन न करने के कारण समरजहां (अ0सा0-1) को अभियोजन के द्वारा पक्ष विरोधी घोषित कर उसका विस्तारपूर्वक परीक्षण

किया गया, परन्तु समरजहां (अ0सा0-1) ने अभियोजन का लेषमात्र भी समर्थन नहीं किया।

- 11- समरजहां (अ0सा0-1) ने स्पष्ट रूप से इस बात का खण्डन किया है कि शादी के तीन दिन बाद ही आरोपीगण उसे दहेज की मांग को लेकर प्रताड़ित कर रहे थे तथा उसे पति से पीटवाते थे। इस साक्षी ने यह स्पष्ट कहना है कि आरोपीगण ने कभी उससे पिता के यहां से मोटरसाईकिल एवं एल.सी.डी. लाने की कभी कोई मांग नहीं की और जायदाद में हिस्सा मांगा और न उसने अपने परिवार को यह बताया था कि आरोपीगण दहेज के लिये उसे मानसिक रूप से प्रताड़ित करते हैं या मारपीट करते हैं। समरजहां (अ0सा0-1) का अभियोजन के विरुद्ध यह स्पष्ट कहना है कि प्र.पी.-01 का आवेदन उसके स्वयं नहीं लिखा, उसे किसने लिखा इसकी जानकारी नहीं है। उसके परिवार के लोगों ने आवेदन पर हस्ताक्षर कराये थे।
- 12- समरजहां (अ0सा0-1) के द्वारा न्यायालय में दिये गये कथनों से यह स्पष्ट होता है कि इस साक्षी के अनुसार अभियुक्तगण ने उसे दहेज की मांग को लेकर न तो कभी प्रताड़ित किया न ही उसके साथ कभी कोई मारपीट की, बल्कि उसका मात्र पति से मामूली बातों पर झगडा होता था। जिसके संबंध में उसके परिवार के लोगों ने थाने पर प्र.पी.-01 का आवेदन दिया था, जिसमें लिखी अंतरवस्तु की उसे जानकारी नहीं है, उसने मात्र थाने पर परिवार के लोगों के कहने पर हस्ताक्षर किये थे। समरजहां (अ0सा0-1) के पिता हक्कूल यकीन (अ0सा0-02) ने भी अपने न्यायालीन कथनों में व्यक्त किया है कि शादी के बाद एक ढेड साल तक समरजहां का ससुराल वालों से कोई विवाद नहीं हुआ था उसकी मात्र अब्दुल रहीस से नहीं बनती थी और इसी कारण से झगडा होता था और इसी कारण से उसकी लडकी उसके पास निवास रही है।
- 13- हक्कूल यकीन (अ0सा0-02) ने अपने मुख्यपरीक्षण में अभियोजन के समर्थन में आरोपित अपराध के संबंध में कोई कथन न देते हुये मात्र अपनी लडकी का पति के साथ इस बात पर विवाद होना बताया है कि उसकी लडकी पति से नहीं बनती थीं। फरियादियां के चाचा अब्दुल वहीद (अ0सा0-03) का भी अपने कथनो में यही कहना है कि समरजहां (अ0सा0-1) की अब्दुल वहीद से नहीं बनती थी और इसी बात पर विवाद और झगडा होता था। इन दोनों ही साक्षियों का कही भी यह कहना नहीं है कि अभियुक्तगण ने दहेज की मांग के लिये उसकी लडकी को कभी भी प्रताड़ित कर उसके साथ मारपीट की थी। सुफात हुसैन (अ0सा0-04) अपने न्यायालीन कथनों में घटना की जानकारी होने से इन्कार करता है तथा पुलिस को भी कोई बयान न देना बताता है।
- 14- हक्कूल यकीन (अ0सा0-02), अब्दुल वहीद (अ0सा0-03) व सफात हुसैन (अ0सा0-04) के द्वारा आरोपित अपराध के संबंध में अभियोजन का समर्थन न करने के कारण अभियोजन के द्वारा इन साक्षियों को पक्ष विरोधी कर उनका विस्तृत परीक्षण किया गया, जिसमें इन साक्षियों ने अभियोजन का लेषमात्र भी समर्थन नहीं किया था। हक्कूल यकीन व अब्दुल वहीद (अ0सा0-03) का स्पष्ट कहना है कि आरोपीगण ने कभी भी मोटरसाईकिल या एल.सी.डी. की दहेज के रूप में कोई मांग फरियादी ने नहीं की और न

ही इस कारण से उसे प्रताडित किया और न ही इस संबंध में समरजहां (अ0सा0-1) ने उन्हें कुछ बताया। यह साक्षी भी पुलिस को कथन देने से ही इन्कार करता है।

15-अतः अभिलेख पर आई साक्ष्य से यह स्पष्ट होता है कि प्र.पी.-01 का आवेदन स्वयं फरियादिया समरजहां के द्वारा हस्ताक्षरित कर थाने पर दिया गया, परन्तु आवेदन में वर्णित घटना अपने आप में मात्र आवेदन प्रदर्शित होने से साबित नहीं होती है, क्योंकि प्र. पी.-01 का आवेदन अपने आप में घटना का निश्चायक साक्ष्य नहीं है, उसे मौखिक साक्ष्य से साबित किया जाना आवश्यक था, परन्तु अभियोजन की ओर से प्रस्तुत साक्षियों में से फरियादी सहित किसी भी साक्षी ने अभियोजन का समर्थन नहीं किया तथा अभियोजन घटना के विरुद्ध न्यायालय में कथन दिये हैं। समरजहां (अ0सा0-1) के अनुसार जहां उसके पति से मामूली बातों पर विवाद हुआ था, वही हक्कूल यकीन (अ0सा0-02) व अब्दुल वहीद (अ0सा0-03) के अनुसार मात्र इसी मामूली विवाद पर से समरजहां (अ0सा0-1) अपनी मर्जी से मायके में रह रही थी। इन सभी साक्षियों का एक राय होकर कहना है कि आरोपीगण ने न तो कभी दहेज की कोई मांग की और न ही समरजहां (अ0सा0-1) को आरोपीगण ने दहेज की मांग के लिये प्रताडित किया और न ही इस संबंध में थाने पर रिपोर्ट की गई।

16-फरियादी समरजहां (अ0सा0-1) अपने न्यायालीन कथनों में अभियोजन कहानी के विरुद्ध ऐसी किसी भी घटना के घटित होने से इन्कार करती हैं जिसमें अभियुक्तगण ने उसे दहेज के लिये उसे प्रताडित कर दहेज की मांग को लेकर उसके साथ मारपीट की। यहां तक फरियादिया प्र0पी0 1 के आवेदन एवं प्र.पी.-02 की रिपोर्ट में क्या लिखा है, इसकी जानकारी न होने के साथ ऐसी कोई भी घटना पुलिस को लेख कराने से इन्कार करती है। वहीं उसका पिता हक्कूल यकीन (अ0सा0-02) व चाचा अब्दुल वहीद (अ0सा0-03) भी समरजहां (अ0सा0-1) के कथनों के सामान ही न्यायालय में अभियोजन के विरुद्ध कथन देते हुये मात्र फरियादिया का पति से मामूली बातों पर विवाद होना बताते हैं।

17-अतः ऐसे में अभिलेख पर अभियुक्तगण के विरुद्ध इस आशय की कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं है कि अभियुक्तगण ने शादी के बाद कभी भी फरियादी समरजहां को दहेज के रूप में मोटरसाईकिल एवं एल.सी.डी. लाने के लिये या जायदाद में हिस्सा लाने के लिये प्रताडित किया या उसके साथ उक्त कारण से मारपीट की थी। फरियादी का स्वयं यह कहना है कि वह अपनी मर्जी से मायके में रह रही है। अतः अभिलेख पर जो साक्ष्य उपलब्ध है उसके अनुसार अभियुक्त और फरियादी के मध्य पति-पत्नी के बीच होने वाले वैचारिक मतभेद एवं घरेलू विवाद थे। अब देखा ये जाना है कि वास्तव में ऐसे विवाद भा0द0वि0 की धारा 498 (ए) के अपराध की श्रेणी में आते हैं अथवा नहीं।

18-यहां भा0दं0वि0 की धारा 498 (ए) का उल्लेख किया जाना उचित होगा। धारा 498 (ए) के अनुसार-

जो कोई, किसी स्त्री का पति या पति का नातेदार होते हुए, ऐसी स्त्री के प्रति क्रूरता करेगा, वह कारावास से, जिसकी अवधि तीन वर्ष तक की हो सकेगी, दण्डित किया

जाएगा और जुर्माने से भी दण्डनीय होगा।

**स्पष्टीकरण:**—इस धारा के प्रयोजनों के लिये, “कूरता ” से निम्नलिखित अभिप्रेत है—

(क) जानबूझकर किया गया कोई आचरण जो ऐसी प्रकृति का है जिससे उस स्त्री को आत्महत्या करने के लिये प्रेरित करने की या उस स्त्री के जीवन, अंग या स्वास्थ्य को (जो चाहे मानसिक हो या शारीरिक) गम्भीर क्षति या खतरा कारित करने की सम्भावना है; या

(ख) किसी स्त्री को इस दृष्टि से तंग करना कि उसको या उसके किसी नातेदार को किसी सम्पत्ति या मूल्यवान प्रतिभूति की कोई मांग पूरी करने के लिये प्रपीडित किया जाए या किसी स्त्री को इस कारण तंग करना कि उसका कोई नातेदार ऐसी मांग पूरी करने में असफल रहा है।

19— धारा 498 (ए) में उल्लेखित शब्द कूरता को स्पष्ट करने के लिये उक्त धारा के स्पष्टीकरण में दो खण्ड (क) तथा (ख) का उल्लेख किया गया है अतः ऐसे में धारा 498 (ए) के अपराध के लिये यह अभिनिर्धारित किया जाना है कि उपलब्ध साक्ष्य के आधार पर कूरता खण्ड (क) के अधीन आती है या खण्ड (ख) के अधीन, या दोनों खण्डों की अधीन आती है। अभिलेख पर फरियादी सहित अन्य किसी भी साक्षी ने ऐसे कोई कथन नहीं दिये हैं जिससे यह दर्शित होता हो कि अभियुक्त के द्वारा फरियादी के साथ किया गया आचरण फरियादी अफसाना (अ0सा0-1) को आत्महत्या करने के लिये या जीवन, अंग या स्वास्थ्य को (जो चाहे मानसिक हो या शारीरिक) गम्भीर क्षति या खतरा उत्पन्न करता हो।

20—पति-पत्नी के मध्य वैचारिक मतभेद एवं मामूली घरेलू विवाद वैवाहिक जीवन का एक भाग होता है अतः ऐसे मामूली विवाद 498 (ए) के स्पष्टीकरण के खण्ड क की श्रेणी में नहीं आते। जहां तक स्पष्टीकरण के खण्ड (ख) का प्रश्न है तो स्वयं फरियादी सहित अन्य साक्षियों ने इस बात का खण्डन किया है कि अभियुक्त ने शादी के बाद समरजहां (अ0सा0-1) से कभी भी दहेज की कोई मांग की।

21—अभिलेख पर इस आशय की कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं है कि अभियुक्तगण ने फरियादी समरजहां (अ0सा0-1) के साथ जानबूझकर ऐसा कोई आचरण किया जिससे फरियादी आत्महत्या करने के लिये प्रेरित हो या फरियादी के जीवन, अंग या मानसिक अथवा शारीरिक रूप से गम्भीर क्षति या खतरा कारित करने की सम्भावना थी। वहीं फरियादी सहित अभियोजन साक्षियों के द्वारा अभियोजन के समर्थन में कथन देने से अभिलेख पर इस आशय की भी कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं है, जिससे यह प्रमाणित हो सके कि अभियुक्त ने फरियादी समरजहां (अ0सा0-1) को या उसके पिता को दहेज की कोई मांग पूरी करने के लिये प्रपीडित किया अथवा उक्त कारण से फरियादी को तंग किया कि फरियादी के परिवार से ऐसी मांग पूरी करने में असफल रहा है।

22—परिणामस्वरूप अभिलेख पर आई साक्ष्य एवं उपरोक्त विवेचन के आधार पर

अभियोजन यह साबित करने में सफल नहीं हुआ कि अभियुक्तगण समरजहां (अ0सा0-1) कि शादी के बाद से दिनांक 30.04.2013 से 05.08.2015 की अवधि के मध्य बाहर शहर गरमाई वाबडी के पास ससुराल में फरियादी के पति अथवा पति के नाते दार होते हुये, फरियादी समरजहां (अ0सा0-1) से दहेज में मोटरसाईकिल, एलसीडी, व जायदाद में हिस्से की मांग करते हुये उसे शारीरिक एवं मानसिक रूप से प्रताडित कर उसके साथ कूरता कारित की ।

23- फलतः अभियुक्तगण अब्दुल रहीस पुत्र अब्दुल हमीद, अब्दुल हमीद पुत्र अब्दुल गनी, अब्दुल जलील पुत्र अब्दुल हमीद, अब्दुल रसीद पुत्र अब्दुल हमीद, अब्दुल अलील पुत्र अब्दुल हमीद, सिताराबी पुत्री अब्दुल हमीद, गुलचमन पत्नी अब्दुल हमीद, इरफानाबी पत्नी अब्दुल जलील, नाजमीन पत्नी अब्दुल रसीद को भा.द.वि. की धारा 498 (ए) के आरोप प्रमाणित न होने से अभियुक्तगण अब्दुल रहीस पुत्र अब्दुल हमीद, अब्दुल हमीद पुत्र अब्दुल गनी, अब्दुल जलील पुत्र अब्दुल हमीद, अब्दुल रसीद पुत्र अब्दुल हमीद, अब्दुल अलील पुत्र अब्दुल हमीद, सिताराबी पुत्री अब्दुल हमीद, गुलचमन पत्नी अब्दुल हमीद, इरफानाबी पत्नी अब्दुल जलील, नाजमीन पत्नी अब्दुल रसीद को भा.द.वि. की धारा 498 (ए) के तहत दण्डनीय अपराध के आरोप में दोष मुक्त घोषित किया जाता है।

24-अभियुक्तगण धारा 428 द0प्र0सं0 का प्रमाण पत्र तैयार किया जावे। अभियुक्तगण के उपस्थिति संबंधी जमानत मुचलके भारमुक्त किये जाते हैं। प्रकरण में जुप्तशुदा संपत्ति कुछ नहीं।

निर्णय पृथक से टंकित कर विधिवत  
हस्ताक्षरित व दिनांकित किया गया।

मेरे बोलने पर टंकित किया गया।

(आसिफ अहमद अब्बासी)  
न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी  
चंदेरी जिला अशोकनगर (म.प्र.)

(आसिफ अहमद अब्बासी)  
न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी  
चंदेरी जिला अशोकनगर (म.प्र.)